अनुक्रमणिका

विषय / अध्याय	पृष्ठ
बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र	
1. बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र: वृद्धि एवं विकास, विकास की अवस्थाएं एवं सिद्धांत	1 - 71
2. बुद्धि एवं बुद्धिलब्धि	72 - 103
3. बाल अध्ययन की विधियां	104 - 110
4. अधिगम	111 - 140
5. शिक्षण एवं अधिगम	141 - 156
6. विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे	157 - 182
7. लिंग एवं जेंडर	183 - 186
8. पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, अवलोकन, मूल्यांकन	187 - 199
9. अधिनयम: RTE 2009, NEP 2020, NCF 2005	200 - 215

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

(Child Development and Pedagogy)

भाग 1 - परिचय

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र (CDP) वह विज्ञान है जो जन्म से लेकर परिपक्वता तक मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन करता है। यह विषय शिक्षक पात्रता परीक्षाओं (TET, CTET, CG-TET) और शिक्षक भर्ती परीक्षाओं के लिए आधारभूत स्तंभ है।

बाल विकास के आयाम

- **विकास के क्षेत्र**
  - **शारीरिक विकास (Physical)**
    - ऊंचाई
    - भार
    - गामक कौशल
    - स्नायुतंत्र
  - **संज्ञानात्मक विकास (Cognitive)**
    - बुद्धि
    - भाषा
    - चिंतन
    - स्मृति
    - तर्क
  - **सामाजिक-संवेगात्मक (Socio-Emotional)**
    - आत्म-नियंत्रण
    - नैतिकता
    - सामाजिक संबंध

भाग 2 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बाल विकास के अध्ययन का इतिहास शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।

बाल विकास का ऐतिहासिक विकासक्रम

बाल अध्ययन का इतिहास

17वीं शताब्दी

जॉन एमोस कोमेनियस ने 'School of Infancy' की स्थापना की

18वीं शताब्दी

पेस्टालोजी ने अपने 3.5 वर्षीय पुत्र पर अध्ययन कर 'Baby Biography' तैयार की

19वीं शताब्दी

जर्मनी के प्रेयर (Preyer) ने बाल विकास पर वैज्ञानिक शोध प्रकाशित किए

20वीं शताब्दी

स्टेनली हॉल (Stanley Hall) ने 'बाल अध्ययन आंदोलन' शुरू किया और 'Adolescence' पुस्तक लिखी (इन्हें बाल मनोविज्ञान का जनक माना जाता है)

भाग 3 - विस्तृत अध्ययन

इस खंड में हम बाल विकास की आधारभूत अवधारणाओं, सिद्धांतों और महत्वपूर्ण सिद्धांतों का सूक्ष्म विश्लेषण करेंगे।

◆ 1. अभिवृद्धि एवं विकास (Growth and Development)

अभिवृद्धि और विकास अक्सर एक समान समझे जाते हैं, किंतु तकनीकी रूप से इनमें व्यापक अंतर है।

अभिवृद्धि बनाम विकास

आधार	अभिवृद्धि (Growth)	विकास (Development)
--	--	--
• ***स्वरूप***	• बाह्य एवं शारीरिक होता है।	• आंतरिक एवं बहुमुखी होता है।
• ***मापन***	• मात्रात्मक (Quantitative) - भार, लंबाई को मापा जा सकता है।	• गुणात्मक (Qualitative) - कार्यकुशलता और व्यवहार।
• ***समय***	• एक निश्चित आयु (परिपक्वता) तक चलती है।	• जीवनपर्यंत (Womb to Tomb) चलने वाली प्रक्रिया है।
• ***क्षेत्र***	• संकुचित (विकास का ही एक हिस्सा है)।	• व्यापक (इसमें अभिवृद्धि शामिल है)।
• ***परिवर्तन****	• केवल संरचनात्मक होता है।	• प्रकार्यात्मक (Functional) होता है।

◆ 2. विकास के प्रमुख सिद्धांत

🔷 विकास की कार्यप्रणाली के नियम

- **निरंतरता का सिद्धांत:** विकास कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है जो गर्भाधान से मृत्यु तक चलती है।
- **क्रमबद्धता का नियम:** विकास एक निश्चित क्रम में होता है (जैसे: पहले बैठना, फिर रेंगना, फिर चलना)।
- **दिशा का सिद्धांत:** इसके दो रूप हैं - 1. शिरोपुच्छीय (Cephalocaudal) - सिर से पैर की ओर, 2. समीप-दूराभिमुख (Proximodistal) - केंद्र से परिधि/बाहर की ओर।
- **वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत:** प्रत्येक बालक के विकास की दर भिन्न-भिन्न होती है।
- **एकीकरण का सिद्धांत:** बालक पहले संपूर्ण अंग को, फिर उसके भागों को चलाना सीखता है।

◆ 3. विकास की अवस्थाएं (Stages of Development)

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विकास को अलग-अलग चरणों में बांटा है, किंतु शैक्षणिक दृष्टिकोण से निम्नलिखित वर्गीकरण सर्वमान्य है:

विकास की महत्वपूर्ण अवस्थाएं

अवस्था	आयु सीमा	मुख्य विशेषताएँ
--	--	--
• ***गर्भावस्था***	• गर्भाधान से जन्म तक	• तीव्रतम शारीरिक विकास।
• ***शैशवावस्था (Infancy)***	• जन्म से 5/6 वर्ष	• सीखने का आदर्श काल, अनुकरण द्वारा सीखना, संवेग प्रधान।
• ***बाल्यावस्था (Childhood)***	• 6 से 12 वर्ष	• गंदी अवस्था, टोली की आयु (Gang Age), तार्किक चिंतन का प्रारंभ।
• ***किशोरावस्था (Adolescence)***	• 12 से 18 वर्ष	• संघर्ष, तनाव और तूफान की अवस्था, पहचान का संकट (Identity Crisis)।

◆ 4. महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक सिद्धांत (Major Theories)

🔷 जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास (Jean Piaget)

- **अनुकूलन (Adaptation):** इसमें आत्मसातीकरण (Assimilation) और समंजन (Accommodation) शामिल हैं।
- **साम्यधारण (Equilibration):** नए ज्ञान और पुराने ज्ञान के बीच संतुलन।
- **अवस्थाएं:** 1. संवेदी पेशीय (0-2 वर्ष), 2. पूर्व-संक्रियात्मक (2-7 वर्ष), 3. मूर्त संक्रियात्मक (7-11 वर्ष), 4. औपचारिक संक्रियात्मक (11 वर्ष से अधिक)।

🔷 लेव वायगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत (Lev Vygotsky)

- **ZPD (Zone of Proximal Development):** वास्तविक विकास और संभावित विकास के बीच का अंतर।
- **स्कैफोल्डिंग (Scaffolding):** वयस्क द्वारा दी जाने वाली अस्थायी सहायता (पाड़/ढांचा)।
- **MKO (More Knowledgeable Other):** वह व्यक्ति जो बालक से अधिक ज्ञान रखता हो।

◆ 5. शिक्षा शास्त्र (Pedagogy) एवं शिक्षण प्रक्रिया

शिक्षण विधियों का वर्गीकरण

- **शिक्षण विधियाँ**
  - **शिक्षक केंद्रित**
    - व्याख्यान विधि
    - प्रदर्शन विधि
  - **बाल केंद्रित**
    - खेल विधि
    - प्रोजेक्ट विधि
    - अन्वेषण (Heuristic) विधि
  - **प्रगतिशील शिक्षा**
    - समावेशी शिक्षा
    - वैयक्तिक शिक्षण

भाग 4 - अंतर्संबंध

बाल विकास का गहरा संबंध **आनुवंशिकता (Heredity)** और **वातावरण (Environment)** से है। वुडवर्थ के अनुसार, 'विकास = आनुवंशिकता × वातावरण'। यह केवल जोड़ नहीं बल्कि गुणनफल है। शिक्षा शास्त्र का उद्देश्य बाल विकास के सिद्धांतों को कक्षा-कक्ष में लागू करना है ताकि प्रभावी अधिगम (Learning) सुनिश्चित हो सके।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

- ✔ **स्टेनली हॉल:** किशोरावस्था को 'तनाव एवं तूफान की अवस्था' कहा।
- ✔ **ई.एल. थार्नडाइक:** 'शिक्षा मनोविज्ञान' के जनक और 'प्रयत्न एवं भूल' का सिद्धांत दिया।
- ✔ **प्रगतिशील शिक्षा के जनक:** जॉन डीवी (John Dewey)।
- ✔ **IQ (बुद्धि लब्धि) सूत्र:** (मानसिक आयु / वास्तविक आयु) × 100 (लुईस टरमन द्वारा संशोधित)।
- ✔ **RTE Act 2009:** 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा (अनुच्छेद 21A)।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[आनुवंशिकता बनाम वातावरण]:** आनुवंशिकता विकास की 'सीमा' तय करती है, जबकि वातावरण यह तय करता है कि उस सीमा तक 'कैसे' पहुँचा जाए।

🎯**[वस्तु स्थायित्व (Object Permanence)]:** यह गुण पियाजे की पहली अवस्था (0-2 वर्ष) के अंत तक विकसित होता है।

🎯**[अन्वेषण विधि]:** इसके प्रतिपादक 'आर्मस्ट्रांग' हैं, जिसे हयूरिस्टिक विधि भी कहते हैं।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम]:** 'अभिवृद्धि' और 'परिपक्वता' को एक न समझें; परिपक्वता आनुवंशिक रूप से निर्धारित जैविक क्रिया है, जबकि अभिवृद्धि केवल बाह्य माप है।

⚠ **[अवस्था भ्रम]:** बाल्यावस्था को 'टोली की आयु' (Gang Age) कहते हैं, जबकि किशोरावस्था को 'वीर पूजा' (Hero Worship) की आयु कहा जाता है।

⚠ **[वृद्धि का रुकना]:** शारीरिक वृद्धि परिपक्वता आने पर रुक जाती है, लेकिन मानसिक विकास और अधिगम निरंतर चलता रहता है।

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

(Education and Psychology)

भाग 1 - परिचय

शिक्षा और मनोविज्ञान दो अलग-अलग विषय होने के बावजूद एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ **शिक्षा** व्यक्ति के व्यवहार में परिमार्जन (Modification) या परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है, वहीं **मनोविज्ञान** व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन (Scientific study of behavior) है। इन दोनों के समन्वय से 'शिक्षा मनोविज्ञान' का जन्म हुआ, जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने का आधार है।

शिक्षा एवं मनोविज्ञान का मूल आधार

- **शैक्षिक मनोविज्ञान**
  - **शिक्षा (Education)** — व्यवहार का परिमार्जन
  - **मनोविज्ञान (Psychology)** — व्यवहार का अध्ययन
  - **लक्ष्य** — सर्वांगीण विकास

व्युत्पत्ति एवं अर्थ

विषय	मूल शब्द	भाषा	शाब्दिक अर्थ
• **शिक्षा**	• शिक्ष (Shiksh)	• संस्कृत	• सीखना और सिखाना
• **Education**	• Educatum / Educare	• लैटिन	• अंदर से बाहर लाना / विकसित करना
• **Psychology**	• Psyche + Logos	• ग्रीक	• आत्मा का विज्ञान / अध्ययन

भाग 2 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मनोविज्ञान का विकास एक लंबी यात्रा है, जो दर्शनशास्त्र (Philosophy) की एक शाखा के रूप में शुरू हुई और अंततः व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्थापित हुई।

मनोविज्ञान का विकासक्रम

मनोविज्ञान की विकास यात्रा

- **16वीं शताब्दी**
  आत्मा का विज्ञान (Science of Soul) - प्लेटो, अरस्तू, डेकार्टे
- **17वीं शताब्दी**
  मन या मस्तिष्क का विज्ञान (Science of Mind) - पोम्पोनॉजी (इटली)
- **19वीं शताब्दी**

चेतना का विज्ञान (Science of Consciousness) - विलियम वुंट, विलियम जेम्स

20वीं शताब्दी

व्यवहार का विज्ञान (Science of Behavior) - जे.बी. वॉटसन, वुडवर्थ, स्किनर

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मील के पत्थर

वर्ष	घटना	विवरण
• 1879	• प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला	• विलियम वुंट द्वारा लीपज़िग (जर्मनी) में स्थापना।
• 1890	• Principles of Psychology	• विलियम जेम्स द्वारा प्रसिद्ध पुस्तक का प्रकाशन।
• 1900	• मनोविश्लेषणवाद	• सिगमंड फ्रायड द्वारा प्रतिपादन।
• 1920	• व्यवहारवाद का उदय	• जे.बी. वॉटसन द्वारा औपचारिक स्थापना।

भाग 3 - विस्तृत अध्ययन

🔷 शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएं

- **संकीर्ण अर्थ:** केवल विद्यालयी शिक्षा (Formal Education) तक सीमित।
- **व्यापक अर्थ:** जन्म से मृत्यु तक चलने वाली निरंतर प्रक्रिया (Lifelong Process)।
- **महात्मा गांधी:** "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"
- **स्वामी विवेकानंद:** "मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"

🔷 मनोविज्ञान की प्रमुख शाखाएं

- **सामान्य मनोविज्ञान:** सामान्य वयस्क मनुष्यों के व्यवहार का अध्ययन।
- **असामान्य मनोविज्ञान:** मानसिक रोगों और असामान्य व्यवहार का अध्ययन।
- **बाल मनोविज्ञान:** गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन।
- **शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology):** मनोविज्ञान के सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग।

◆ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature)

शिक्षा मनोविज्ञान एक **विधायक विज्ञान** (Positive Science) है, क्योंकि यह 'क्या है' (What is) का अध्ययन करता है, 'क्या होना चाहिए' (What ought to be) का नहीं।

शिक्षा मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण परिभाषाएं

विद्वान	परिभाषा का सार
• स्किनर (Skinner)	• "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण और अधिगम (Teaching and Learning) से संबंधित है।"
• क्रो एवं क्रो (Crow & Crow)	• "यह जन्म से वृद्धावस्था तक एक व्यक्ति के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।"
• पील (Peel)	• "शिक्षा मनोविज्ञान 'शिक्षा का विज्ञान' (Science of Education) है।"
• स्टीफन (Stephen)	• "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के शैक्षिक विकास का क्रमिक अध्ययन है।"

🔷 शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope)

- **शिक्षार्थी (The Learner):** उसकी रुचियां, क्षमताएं और व्यक्तिगत भिन्नताएं।
- **अधिगम अनुभव (Learning Experiences):** किस आयु में क्या सिखाया जाए।
- **अधिगम प्रक्रिया (Learning Process):** सीखने के नियम, सिद्धांत और विधियां।
- **अधिगम परिस्थिति (Learning Situation):** कक्षा का वातावरण, अनुशासन और समूह गतिशीलता।
- **मापन एवं मूल्यांकन (Measurement & Evaluation):** छात्र की प्रगति का वैज्ञानिक आकलन।

भाग 4 - अंतर्संबंध (Interrelationship)

शिक्षा और मनोविज्ञान के बीच घनिष्ठ संबंध है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

1. **पाठ्यक्रम (Curriculum):** मनोविज्ञान के कारण ही पाठ्यक्रम 'बाल-केंद्रित' (Child-centered) बना है, जो बालक की आयु और मानसिक स्तर के अनुरूप होता है।
2. **शिक्षण विधियां (Teaching Methods):** करके सीखना (Learning by doing), खेल विधि, और प्रोजेक्ट विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित हैं।
3. **अनुशासन (Discipline):** दमनकारी अनुशासन के स्थान पर 'स्व-अनुशासन' और प्रेमपूर्ण व्यवहार पर बल।
4. **समय-सारणी (Time-table):** कठिन विषयों को पहले और थकान को ध्यान में रखकर विश्राम का प्रावधान।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

✔ **मनोविज्ञान का जनक:** अरस्तू (दर्शनशास्त्र के संदर्भ में)।

✔ **आधुनिक मनोविज्ञान का जनक:** विलियम जेम्स (अमेरिका) या विलियम वुंट।

✔ **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक:** विलियम वुंट।

✔ **शिक्षा मनोविज्ञान का जनक:** एडवर्ड एल. थार्नडाइक (E.L. Thorndike)।

✔ **प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक:** थार्नडाइक।

✔ **व्यवहारवाद के जनक:** जे.बी. वॉटसन (J.B. Watson)।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[तथ्य]:** मनोविज्ञान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **रुडोल्फ गोयकल (Rudolf Gockel)** ने 1590 में अपनी पुस्तक 'Psychologia' में किया था।

🎯**[दृष्टिकोण]:** शिक्षा 'साध्य' (Goal) है, जबकि मनोविज्ञान उस साध्य तक पहुँचने का 'साधन' (Tool) है।

🎯**[भारत का संदर्भ]:** भारत में आधुनिक मनोविज्ञान का प्रारंभ 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में डॉ. एन.एन. सेनगुप्ता के नेतृत्व में हुआ।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम 1]:** मनोविज्ञान को 'आत्मा का विज्ञान' कहना अब मान्य नहीं है, वर्तमान में यह 'व्यवहार का विज्ञान' है।

⚠ **[भ्रम 2]:** शिक्षा मनोविज्ञान केवल शिक्षकों के लिए नहीं, बल्कि अभिभावकों और प्रशासकों के लिए भी अनिवार्य है।

⚠ **[भ्रम 3]:** शिक्षा मनोविज्ञान एक 'आदर्शवादी विज्ञान' (Normative Science) नहीं, बल्कि एक 'विशुद्ध/विधायक विज्ञान' (Positive Science) है।

बाल मनोविज्ञान

(Child Psychology)

भाग 1 - परिचय

बाल मनोविज्ञान (Child Psychology), मनोविज्ञान की वह शाखा है जो बालकों के जन्म-पूर्व (Prenatal) अवस्था से लेकर किशोरावस्था (Adolescence) के अंत तक उनके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। यह न केवल यह समझने में मदद करता है कि बच्चे कैसे बढ़ते हैं, बल्कि यह भी कि वे विशिष्ट व्यवहार क्यों करते हैं।

बाल मनोविज्ञान के मुख्य आयाम

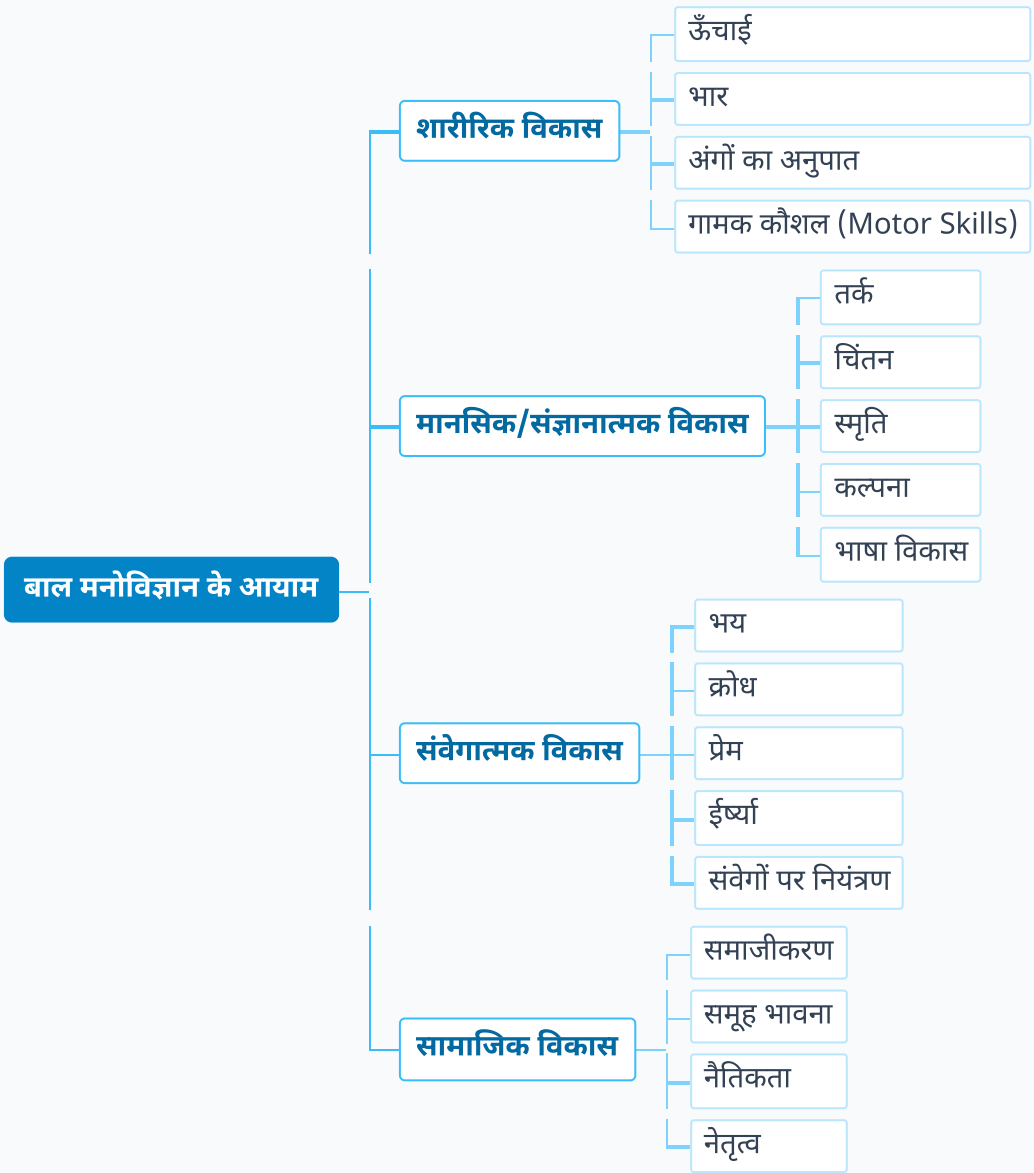

भाग 2 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बाल मनोविज्ञान का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है, जिसमें दार्शनिक विचारों से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों तक का सफर तय किया गया है।

बाल मनोविज्ञान का विकासक्रम

विकास की समयरेखा

17वीं शताब्दी
जॉन एमोस कोमेनियस ने 'School of Infancy' की स्थापना की (1628) और बालकों के लिए 'Orbis Pictus' पुस्तक लिखी।

18वीं शताब्दी
पेस्टालॉजी ने अपने 3.5 वर्षीय पुत्र पर 'Baby Biography' तैयार की।

19वीं शताब्दी
प्रेयर (Preyer) ने 'The Mind of the Child' (1882) पुस्तक लिखी, जिसे बाल मनोविज्ञान का आधार माना गया।

20वीं शताब्दी
स्टेनली हॉल (Stanley Hall) ने 'Child Study Movement' शुरू किया, इन्हें 'बाल मनोविज्ञान का जनक' माना जाता है।

वर्तमान युग
जीन पियाजे, वाइगोत्सकी और कोहलबर्ग के सिद्धांतों का प्रभुत्व।

भाग 3 - विस्तृत अध्ययन

बाल मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए 'वृद्धि' (Growth) और 'विकास' (Development) के अंतर को समझना प्राथमिक आवश्यकता है।

◆ 1. वृद्धि एवं विकास में अंतर

वृद्धि बनाम विकास

विशेषता	वृद्धि (Growth)	विकास (Development)
--	--	--
• **स्वरूप**	• बाह्य और संकुचित (Physical)	• आंतरिक और व्यापक (Holistic)
• **मापन**	• शुद्ध मापन संभव है (किलो, सेमी)	• केवल अवलोकन और मूल्यांकन संभव है
• **अवधि**	• परिपक्वता (Maturity) तक चलती है	• जीवनपर्यंत (Womb to Tomb) चलने वाली प्रक्रिया
• **परिवर्तन**	• केवल मात्रात्मक (Quantitative)	• मात्रात्मक और गुणात्मक (Qualitative) दोनों
• **क्रम**	• कोई निश्चित क्रम नहीं	• एक निश्चित क्रम और दिशा होती है

◆ 2. विकास के महत्वपूर्ण सिद्धांत

विकास की प्रक्रिया कुछ शाश्वत नियमों का पालन करती है, जिन्हें समझना एक शिक्षक के लिए अनिवार्य है।

🔷 विकास की दिशा के दो प्रमुख नियम

- **मस्तकाधोमुखी (Cephalocaudal):** विकास सिर से पैर की ओर होता है। बालक सबसे पहले अपने सिर पर नियंत्रण करना सीखता है।
- **निकट-दूर क्रम (Proximodistal):** विकास शरीर के केंद्र (रीढ़ की हड्डी) से बाहर की ओर (हाथ-पैर की उंगलियों) होता है।

◆ 3. विकास की प्रमुख अवस्थाएं

विकास की अवस्थाओं का वर्गीकरण

अवस्था	आयु वर्ग	मुख्य विशेषता
--	--	--
• **गर्भावस्था (Prenatal)**	• गर्भाधान से जन्म तक	• तीव्रतम शारीरिक परिवर्तन
• **शैशवावस्था (Infancy)**	• जन्म से 5/6 वर्ष तक	• सीखने का आदर्श काल, अनुकरण की प्रवृत्ति
• **बाल्यावस्था (Childhood)**	• 6 से 12 वर्ष तक	• टोली की आयु (Gang Age), स्फूर्ति की अवस्था
• **किशोरावस्था (Adolescence)**	• 12 से 18 वर्ष तक	• तनाव और तूफान की अवस्था, पहचान का संकट

◆ 4. प्रमुख मनोवैज्ञानिक सिद्धांत

🔷 जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

- **संवेदी-पेशीय (0-2 वर्ष):** इंद्रियों के माध्यम से सीखना, 'वस्तु स्थायित्व' (Object Permanence) का गुण।

- **पूर्व-संक्रियात्मक (2-7 वर्ष):** प्रतीकात्मक खेल, 'जीववाद' (Animism) और 'अहंकेंद्रित' (Egocentric) व्यवहार।
- **मूर्त-संक्रियात्मक (7-11 वर्ष):** तार्किक चिंतन की शुरुआत (मूर्त वस्तुओं पर), संरक्षण (Conservation) का बोध।
- **अमूर्त-संक्रियात्मक (11 वर्ष+):** अमूर्त चिंतन, परिकल्पनात्मक तर्क (Hypothetical reasoning)।

🔷 लेव वाइगोत्सकी का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

- **ZPD (Zone of Proximal Development):** वास्तविक विकास और संभावित विकास के बीच का क्षेत्र।
- **Scaffolding (पाड़/ढांचा):** वयस्क द्वारा दी जाने वाली अस्थायी सहायता।
- **MKO (More Knowledgeable Other):** वह व्यक्ति जो बालक से अधिक ज्ञान रखता हो।

एरिक एरिक्सन का मनो-सामाजिक विकास (महत्वपूर्ण चरण)

चरण	अवस्था	संकट/द्वंद्व
--	--	--
• प्रथम	• 0 - 1.5 वर्ष	• विश्वास बनाम अविश्वास (Trust vs Mistrust)
• द्वितीय	• 1.5 - 3 वर्ष	• स्वायत्तता बनाम शर्म (Autonomy vs Shame)
• चतुर्थ	• 6 - 12 वर्ष	• परिश्रम बनाम हीनता (Industry vs Inferiority)
• पंचम	• 12 - 18 वर्ष	• पहचान बनाम भूमिका भ्रम (Identity vs Role Confusion)

भाग 4 - अंतर्संबंध

बाल मनोविज्ञान का सीधा संबंध शिक्षा शास्त्र (Pedagogy) से है। यह शिक्षक को निम्नलिखित क्षेत्रों में सहायता करता है:
1. **वैयक्तिक भिन्नता:** कक्षा में अलग-अलग क्षमता वाले बच्चों के लिए शिक्षण विधियों का चयन।
2. **पाठ्यक्रम निर्माण:** आयु और मानसिक स्तर के अनुसार विषयों का निर्धारण।
3. **अनुशासन:** दंडात्मक के बजाय मनोवैज्ञानिक अनुशासन को बढ़ावा देना।
4. **शिक्षण विधियां:** खेल विधि (Froebel), किंडरगार्टन, और मोंटेसरी पद्धतियों का आधार बाल मनोविज्ञान ही है।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

- ✔ **स्टेनली हॉल:** 'Adolescence' (1904) पुस्तक के लेखक और किशोरावस्था के मनोविज्ञान के जनक।
- ✔ **जे.बी. वॉटसन:** "मुझे एक दर्जन स्वस्थ बच्चे दो, मैं उन्हें कुछ भी (डॉक्टर, चोर) बना सकता हूँ" - व्यवहारवाद का प्रबल समर्थक।
- ✔ **सिगमंड फ्रायड:** मनोविश्लेषणवाद के जनक, जिन्होंने 'Id, Ego, Super-ego' की अवधारणा दी।
- ✔ **वंशानुक्रम vs वातावरण:** विकास = वंशानुक्रम × वातावरण (वुडवर्थ के अनुसार)। यह योगात्मक नहीं बल्कि गुणात्मक संबंध है।
- ✔ **बाल विकास का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विवरण:** 18वीं शताब्दी में पेस्टालॉजी द्वारा दिया गया।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[Object Permanence]:** यदि बच्चा छिपी हुई वस्तु को ढूंढ लेता है, तो उसने पियाजे की पहली अवस्था (संवेदी-पेशीय) प्राप्त कर ली है।

🎯**[Conservation]:** गिलास में पानी की मात्रा समान होने पर भी आकार बदलने से भ्रमित न होना 'संरक्षण' कहलाता है (मूर्त संक्रियात्मक अवस्था)।

🎯**[Critical Period]:** भाषा विकास के लिए सबसे संवेदनशील समय 'प्रारंभिक बाल्यावस्था' (2-6 वर्ष) है।

🎯**[Storm and Stress]:** किशोरावस्था को 'तनाव और तूफान' की अवस्था 'स्टेनली हॉल' ने कहा है।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम]:** 'वृद्धि' और 'विकास' पर्यायवाची नहीं हैं; विकास व्यापक है जिसमें वृद्धि समाहित है।

⚠ **[अपवाद]:** विकास की दर सभी बालकों में एक समान नहीं होती, यद्यपि विकास का 'क्रम' (Sequence) समान होता है।

⚠ **[तथ्यात्मक अंतर]:** वाइगोत्सकी ने 'निजी भाषण' (Private Speech) को संज्ञानात्मक विकास का आधार माना, जबकि पियाजे ने इसे 'अहंकेंद्रित' (Egocentric) कहकर कम महत्व दिया।

वृद्धि एवं विकास

(Growth and Development)

भाग 1 - परिचय

बाल विकास का अध्ययन मनोविज्ञान की वह शाखा है जो गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यंत होने वाले परिवर्तनों का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। **वृद्धि (Growth)** और **विकास (Development)** दो ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग प्रायः एक-दूसरे के पूरक के रूप में किया जाता है, परंतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इनमें व्यापक अंतर है। जहाँ वृद्धि केवल शारीरिक और मात्रात्मक परिवर्तनों को दर्शाती है, वहीं विकास एक बहुआयामी और अनवरत प्रक्रिया है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक सभी पक्ष सम्मिलित होते हैं।

बाल विकास की संरचना

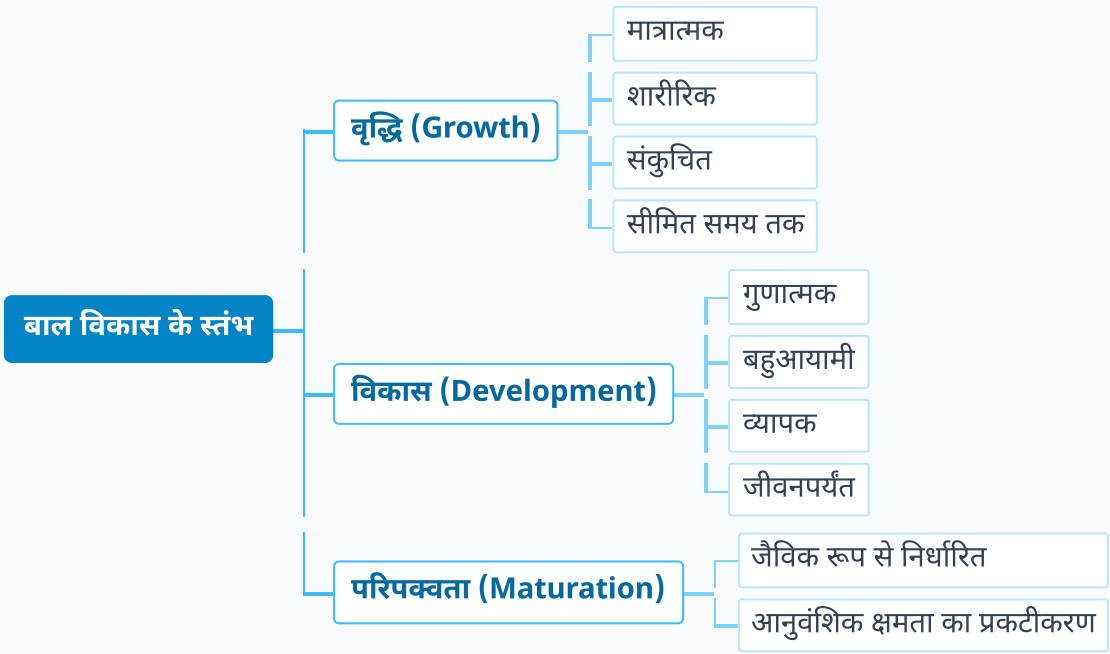

भाग 2 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बाल विकास के अध्ययन का इतिहास शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।

बाल विकास के अध्ययन का इतिहास

ऐतिहासिक विकासक्रम

18वीं शताब्दी

पेस्टालोजी ने अपने 3.5 वर्षीय पुत्र पर अध्ययन कर 'Baby Biography' तैयार की

19वीं शताब्दी

प्रेयर (Preyer) ने 'The Mind of the Child' पुस्तक लिखी। स्टेनली हॉल (Stanley Hall) ने अमेरिका में बाल अध्ययन आंदोलन शुरू किया (फादर ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी)

20वीं शताब्दी

बाल विकास के सिद्धांतों का स्वर्ण युग (पियाजे, वाइगोत्स्की, कोहलबर्ग, एरिक्सन का योगदान)।

भाग 3 - विस्तृत अध्ययन

वृद्धि और विकास की सूक्ष्म अवधारणाओं को समझने के लिए इनके अंतर, सिद्धांतों और प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण अनिवार्य है।

◆ वृद्धि एवं विकास में तुलनात्मक विश्लेषण

वृद्धि बनाम विकास

आधार	वृद्धि (Growth)	विकास (Development)
-	-	-
• **स्वरूप**	• बाह्य एवं शारीरिक (External & Physical)	• आंतरिक एवं बहुआयामी (Internal & Multi-dimensional)
• **प्रकृति**	• मात्रात्मक (Quantitative) - जिसे मापा जा सके	• गुणात्मक (Qualitative) एवं मात्रात्मक दोनों
• **समय सीमा**	• परिपक्वता (Maturation) प्राप्त करने पर रुक जाती है	• जीवनपर्यंत (Womb to Tomb) चलने वाली प्रक्रिया
• **मापन**	• स्पष्ट मापन संभव है (भार, लंबाई)	• निरीक्षण एवं व्यवहार के आधार पर मूल्यांकन संभव है
• **क्षेत्र**	• संकुचित (Narrow) - यह विकास का ही एक हिस्सा है	• व्यापक (Broad) - इसमें वृद्धि समाहित है
• **दिशा**	• कोई निश्चित दिशा नहीं होती	• एक निश्चित दिशा और क्रम में होता है

◆ विकास के प्रमुख सिद्धांत (Principles of Development)

🔷 विकास के सार्वभौमिक सिद्धांत

- **निरंतरता का सिद्धांत (Principle of Continuity):** विकास कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है जो माँ के गर्भ से शुरू होकर मृत्यु तक चलती है।
- **व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत (Individual Differences):** प्रत्येक बालक की विकास की दर (Rate) भिन्न-भिन्न होती है, भले ही उनका क्रम समान हो।
- **क्रमबद्धता का सिद्धांत (Principle of Orderly Sequence):** विकास एक निश्चित क्रम में होता है। जैसे- बच्चा पहले बैठना, फिर रेंगना और फिर चलना सीखता है।
- **सामान्य से विशिष्ट की ओर (General to Specific):** बालक पहले सामान्य क्रियाएँ करता है, उसके बाद विशिष्ट क्रियाएँ (जैसे- पहले पूरे हाथ से वस्तु पकड़ना, फिर उंगलियों का प्रयोग)।

- **एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Integration):** बालक पहले अंगों को और फिर अंगों के भागों को चलाना सीखता है, फिर उनमें समन्वय स्थापित करता है।
- **अंतर्संबंध का सिद्धांत (Principle of Interrelation):** शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

◆ विकास की दिशा के सिद्धांत (Direction of Development)

विकास की दिशा

सिद्धांत	विवरण
-	-
• मस्तकाधोमुखी (Cephalocaudal)	• विकास 'सिर से पैर' की दिशा में होता है। बच्चा पहले सिर पर नियंत्रण करता है।
• समीप-दूराभिमुख (Proximodistal)	• विकास 'केंद्र से परिधि' या 'मध्य से बाहर' की ओर होता है। (जैसे- रीढ़ की हड्डी से हाथों की ओर)।
• वर्तुलाकार बनाम रेखीय (Spiral vs Linear)	• विकास रेखीय न होकर वर्तुलाकार होता है; वह एक स्तर पर रुककर मजबूती प्राप्त करता है फिर आगे बढ़ता है।

◆ विकास की अवस्थाएँ (Stages of Development)

विकास का कालक्रम

विकास की अवस्थाएँ

- **गर्भावस्था (Prenatal)** — गर्भाधान से जन्म तक (280 दिन / 40 सप्ताह / 9 माह 10 दिन)
- **शैशवावस्था (Infancy)** — जन्म से 5/6 वर्ष तक (सीखने का आदर्श काल)
- **बाल्यावस्था (Childhood)** — 6 से 12 वर्ष तक (टोली की आयु/गैंग एज)
- **किशोरावस्था (Adolescence)** — 12 से 18 वर्ष तक (तनाव एवं तूफान की अवस्था)
- **प्रौढ़ावस्था (Adulthood)** — 18 वर्ष के पश्चात

◆ विकास को प्रभावित करने वाले कारक

🔷 निर्धारक कारक (Determinants)

- **वंशानुक्रम (Heredity):** यह विकास की 'सीमा' निर्धारित करता है। इसे "स्थिर" (Static) सामाजिक संरचना माना जाता है।
- **वातावरण (Environment):** यह विकास को 'आकार' देता है। इसे "गत्यात्मक" (Dynamic) कारक माना जाता है।
- **सूत्र:** विकास (D) = वंशानुक्रम (H) × वातावरण (E) - **वुडवर्थ** के अनुसार।

- **अन्य कारक:** पौष्टिक भोजन, रोग, अंतःस्रावी ग्रंथियाँ (Hormones), बुद्धि और लैंगिक भिन्नता।

भाग 4 - अंतर्संबंध

वृद्धि और विकास का गहरा संबंध **अधिगम (Learning)** और **परिपक्वता (Maturation)** से है।
1. **परिपक्वता और अधिगम:** परिपक्वता एक जैविक प्रक्रिया है जो सीखने की तत्परता पैदा करती है। बिना परिपक्वता के अधिगम प्रभावी नहीं हो सकता।
2. **शारीरिक और मानसिक विकास:** "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है" (अरस्तू)। शारीरिक कमियाँ अक्सर संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास को बाधित करती हैं।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

✔ **शैशवावस्था:** इसे 'सीखने का आदर्श काल' **वेलेंटाइन** ने कहा है।
✔ **किशोरावस्था:** इसे 'तनाव, तूफान और संघर्ष की अवस्था' **स्टेनली हॉल** ने कहा है।
✔ **बाल्यावस्था:** इसे 'जीवन का अनोखा काल' **कोल एवं ब्रूस** ने कहा है।
✔ **विकास की दर:** विकास की दर कभी भी एक समान नहीं रहती (यह कभी तीव्र तो कभी मंद होती है)।
✔ **प्लास्टिसिटी (Plasticity):** विकास में लचीलापन होता है, जिसे अनुभव और प्रशिक्षण से बदला जा सकता है।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[वृद्धि बनाम विकास]:** यदि प्रश्न आए कि "क्या वृद्धि के बिना विकास संभव है?", तो उत्तर होगा- **हाँ**। कई बार शारीरिक वृद्धि रुकने के बावजूद मानसिक या सामाजिक विकास होता रहता है।
🎯**[वंशानुक्रम]:** इसे विकास का 'आधार' (Base) कहा जाता है, जबकि वातावरण को 'ढांचा' (Structure)।
🎯**[Cephalocaudal]:** परीक्षा में इसे 'लंबवत' (Vertical) विकास भी कहा जाता है।
🎯**[Proximodistal]:** इसे 'क्षैतिज' या 'परिधीय' विकास के रूप में भी पूछा जाता है।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम]:** विकास रेखीय (Linear) होता है। **[तथ्य]:** विकास कभी भी सीधी रेखा में नहीं चलता, यह हमेशा वर्तुलाकार (Spiral) होता है।
⚠ **[भ्रम]:** वृद्धि और विकास पर्यायवाची हैं। **[तथ्य]:** वृद्धि केवल शारीरिक है, विकास सर्वांगीण (Holistic) है।
⚠ **[भ्रम]:** विकास केवल वातावरण पर निर्भर है। **[तथ्य]:** विकास वंशानुक्रम और वातावरण का 'गुणनफल' है, न कि 'योगफल'।